

# अगर योगी भी ताश की गड्डी में समा गए होते तो क्या मंज़र होता उत्तर प्रदेश में



पहले तो कृपया मुझे यह कहने की अनुमति दीजिए कि उत्तर प्रदेश का यह चुनाव मोदी-योगी नहीं जनता खुद लड़ रही थी। सपा के जंगल राज से बचने के लिए। नहीं भाजपा में चल रही रसाकसी को देखते हुए यह दो तिहाई बहुमत इस तरह नहीं मिलता। याद कीजिए कि कुछ समय पहले भाजपा गुजरात , उत्तराखंड समेत अपने सभी मुख्य मंत्रियों को ताश की गड्डी की तरह फेंक रही थी। उस समय अगर योगी आदित्यनाथ भी सरेंडर कर ताश की गड्डी में शामिल हो गए होते तो उत्तर प्रदेश विधान सभा चुनाव में क्या यही परिणाम होते ? निश्चित रूप से परिणाम यह नहीं होते। ठीक उल्टा होते। जो और जितनी सीट भाजपा को मिली है , वह और उतनी ही सीट समाजवादी पार्टी की होती। और जो और जितनी सीट समाजवादी पार्टी को मिली है , वह और उतनी ही सीट भाजपा को मिली होती। फिर नरेंद्र मोदी चाहे जितना शीर्षासन कर लेते अखिलेश सिंह यादव के साईकिल का जंगल राज नहीं रोक पाते। किसी सूरत नहीं रोक पाते।

वह तो योगी ने हठ योग का सटीक उपयोग किया और ताल ठोक कर खड़े हो गए। अगर इस रसाकसी में दो-तीन महीने खराब नहीं हुए होते तो भाजपा आज 350 सीट पर जीत का झंडा लिए उपस्थित मिलती। क्यों कि इस आपसी रसाकसी के असर ने न सिर्फ विपक्ष को भरपूर लाभ दिया बल्कि मतदाता भी भ्रमित हुआ। इधर-उधर हुआ। आई ए एस अफसर अरविंद शर्मा के मंत्री बनने , न बनने के विवाद ने भी भाजपा की सीटों में माटा डाला था। फिर केशव प्रसाद मौर्य का पिछड़ा होने का गुमान और मुख्य मंत्री पद पाने की लालसा में योगी के खिलाफ जब-तब बिगुल बजाने ने भी भाजपा का बहुत नुकसान किया। केंद्र ने केशव मौर्या को निरंतर शह दी और अरविंद शर्मा का वितंडा खड़ा किया। लेकिन योगी झुके नहीं कभी। अड़े रहे हठयोगी बन कर। मोदी भूल गए थे कि वह न सिर्फ योगी हैं। नाथ पंथ के योगी हैं। जिस का एक सूत्र हठयोग भी है।

जल्दी ही योगी के हठयोग का नुकसान होता मोदी को दिखने लगा। योगी को पूर्वांचल एक्सप्रेस पर पैदल छोड़ कर पीछे-पीछे चलने वाले योगी को , लखनऊ के राज भवन में कंधे पर हाथ रख कर अनुभवत बराबरी में ले कर चलने लगे मोदी। तो भी मोदी के काफिले के पीछे-पीछे पैदल चल रहे योगी के संदेश को लोग अलग-अलग पाठ निकलने लगे। जो भी हो बीच की खाई पटने लगी। अपने भाषणों में योगी राज के बुलडोजर का हवाला देने लगे। मोदी योगी को , यू पी के लिए बहुत उपयोगी कहने लगे। लेकिन अब तक जंगल राज के प्रतीक अखिलेश यादव और उन के जातीय और अपराधी

सलाहकारों को पर्याप्त आनंद और मसाला मिल गया था। मीडिया में सपा के पक्ष में माहौल बनाने के लिए अखिलेश द्वारा पर्याप्त पैसा बंट चुका था। सोशल मीडिया पर पेड वर्कर ने बैटिंग शुरू कर दी थी, भाजपा के खिलाफ। खास कर यू ट्यूबर्स की बटालियन ने तो ग़ज़ब माहौल बना दिया। सब को लगने लगा कि योगी सरकार तो गई। भाजपा संगठन में अलग शतरंज बिछी हुई थी। भीतरघात की बिसात पर लोग शेयर मार्केट की तरह उछाल मार रहे थे। योगी को अयोध्या, मथुरा घुमा रहे थे। अजब-ग़ज़ब के गुणा-भाग बता रहे थे। लेकिन योगी अभिमन्यु नहीं, अर्जुन की भूमिका में उपस्थित थे। यह बात विपक्ष भी नहीं देख रहा था और भाजपा के भीतरघाती भी नहीं देख पा रहे थे। वह तो योगी को अभिमन्यु की तरह घेर कर बस किसी भी तरह मार देने के लिए व्यूह दर व्यूह रच रहे थे। मतलब पूरा चक्रव्यूह।

नेहा राठौर की गायकी में यू पी में का बा गीत में योगी-मोदी से घायल लोगों को थोड़ी राहत जरूर मिली पर इस एक गाने का संदेश अच्छा नहीं गया। उत्तर प्रदेश के लोगों ने इस गीत को अपने अपमान, उत्तर प्रदेश के अपमान से जोड़ कर देखा। फिर इस गीत यू पी में का बा !के जवाब में अनगिनत गीत आ गए। जो यू पी की महत्ता के बखान में पगे हुए थे। इस गाने की ही तरह जब भी कोई काम होता, आचार संहिता के पहले, हर काम को अखिलेश अपना काम बताने लगे। नतीजे में अखिलेश यादव और उन के काम को ले कर हज़ारों लतीफ़े सोशल मीडिया पर घूमने लगे। इतना कि लतीफ़ा सीरीज में वह राहुल गांधी को बहुत पीछे छोड़ गए। दुनिया के हर काम में अखिलेश का नाम लोग जोड़ने लगे। ताजमहल के निर्माण तक में। न्यूटन और आर्कमिडीज के सिद्धांत तक में अखिलेश यादव का नाम जुड़ने लगा। तो क्या यह सब अखिलेश यादव के कान तक कभी पहुंचा नहीं। इस की काट क्या खोजी उन्होंने, दिखा तो नहीं अभी तक। नेहा राठौर के गीत के जवाब में तो इतने वर्जन आ गए कि लोग गिन नहीं सकते। तो अखिलेश ने अपने इर्द-गिर्द सिर्फ़ चाटुकार ही पाल रखे हैं। फिर बाद में जिस तरह अखिलेश और उन के लोगों ने फर्जी और प्रायोजित खबरों का खेल खेला, वह तो और भी हास्यास्पद था।

क्या तो अखिलेश यादव की सरकार बनती देख एक वरिष्ठ आई ए एस अफ़सर रात के अंधेरे में अखिलेश से मिले। तब जब कि इस अफ़सर की लिखित शिकायत अखिलेश चुनाव आयोग से कर चुके थे। हटाने के लिए कहा था। एक और खबर चलवाई कि अखिलेश की सरकार बनती देख एक वरिष्ठ आई ए एस अखिलेश को रोज चार बार गुड मॉर्निंग भेजने लगा। अखिलेश ने उसे ब्लॉक कर दिया। क्या आई ए एस अफ़सर इतने उटल्लू होते हैं ? फिर डी एम अयोध्या के निवास की नाम पट्टी हरी होने की खबर चली कि अखिलेश सरकार को आता देख नाम पट्टी भगवा से हरा किया। और तो और एक अखबार भास्कर में खबर छपी कि अखिलेश और मुलायम के पुराने सरकारी बंगले की रंगाई, पुताई शुरू। जनेश्वर मिश्र पार्क, गोमती रिवर फ्रंट पर काम शुरू। ऐसी फर्जी और तथ्यहीन खबरों पर भी अखिलेश यादव का खूब मजाक उड़ा। पर मोदी-योगी विरोध में पागल वामपंथियों ने सोशल मीडिया पर ऐसी भ्रामक खबरों की क्रांति कर दी। गोलबंद हो कर नैरेटिव बनाने लगे अखिलेश सरकार के आमद की। अरे अखिलेश और मुलायम को वह घर अब नहीं मिल सकते। मुख्य मंत्री बन कर भी नहीं। सुप्रीम कोर्ट ने खाली करवाया है। यह मतिमंद वामपंथी क्या नहीं जानते थे। इतनी धूर्तता। इतिहास थी यह। लेकिन चक्रव्यूह तो चक्रव्यूह। फर्जी ही सही। एक हवा में ही उड़ जाए तो क्या। आखिर यादव राज के जहांपनाह ठहरे।

फिर अखिलेश यादव को अपने ऐसे फर्जी अनगिन चक्रव्यूह से भी ज्यादा एक-दो अंधविश्वास पर भी कुछ ज्यादा विश्वास था। एक अंधविश्वास नोएडा जाने को ले कर था। अभी तक एक मान्यता थी कि उत्तर प्रदेश का मुख्य मंत्री रहते हुए जो भी कभी नोएडा गया, फिर मुख्य मंत्री नहीं रहा। कांग्रेस के शासनकाल का यह अंधविश्वास था। नोएडा बसाने वाले नारायणदत्त तिवारी की कुर्सी जाने से इस अंधविश्वास का किला बना था। फिर तो नोएडा बाद में नारायणदत्त तिवारी भी नहीं जाते थे। वीरबहादुर सिंह भी नहीं गए। इस अंधविश्वास पर मुलायम, मायावती, कल्याण, राजनाथ, राम प्रकाश गुप्त, अखिलेश यादव हर किसी ने विश्वास किया। मुख्य मंत्री रहते हुए इन में से कोई भी नोएडा नहीं गया। तब जब कि इसी नोएडा से मुलायम, मायावती और अखिलेश ने डट कर अपनी-अपनी तिजोरी भरी है। दो-दो आई ए एस अफसर जो बाद में चीफ सेक्रेटरी भी बने मुलायम राज में, अखंड प्रताप सिंह और नीरा यादव इसी नोएडा के भ्रष्टाचार में जेल गए। दर्जनों अफसर जेल जाने की तैयारी में हैं। नोएडा से सर्वाधिक कमाई मायावती ने की है। मनुवाद का विरोध करती हैं। पर अंधविश्वास भरपूर मानती हैं। नोएडा से अथाह कमाई की पर चार बार मुख्य मंत्री रहते कभी नोएडा नहीं गईं। नोएडा में निठारी कांड हुआ, मुलायम राज में। बहुत सारे बच्चों का यौन शोषण कर हत्या कर दी गई। पर अयोध्या में कार सेवकों पर गोली चलवाने वाले मुलायम नोएडा नहीं गए। भाई शिवपाल को भेजा। और शिवपाल नोएडा जा कर बच्चों के परिजनों के घाव पर नमक छिड़कते हुए एक बेहूदा बयान दे कर चले आए।

इसी अपशकुन नोएडा में योगी दर्जन भर से ज्यादा बार गए, मुख्यमंत्री रहते हुए। तो अखिलेश यादव को योगी के इस नोएडा जाने पर विश्वास बहुत था कि योगी तो गए। अपनी मित्र मंडली में शाम को पेय पदार्थ लेते हुए चर्चा करते रहते थे। अखिलेश भूल गए कि योगी, गोरखनाथ की नाथ परंपरा से आते हैं। गोरखनाथ रुढ़ियों और अंधविश्वास को तोड़ने के लिए भी परिचित हैं। फिर दूसरा अपशकुन था कि कोई भी मुख्य मंत्री उत्तर प्रदेश में दूसरे कार्यकाल का सपना भी नहीं देखता था। कांग्रेस राज में इंदिरा गांधी और राजीव गांधी अपने ही मुख्य मंत्री को साल, दो साल में बदल देने का शौक रखते थे। बाद में जैसे इनिंग हो गई थी। मुलायम और मायावती में सरकार की अदला-बदली बीते तीस सालों में उत्तर प्रदेश ने लगातार देखा है। अखिलेश खुद भी रिपीट नहीं कर पाए थे। तो योगी के लिए भी अखिलेश के मन में यही तमन्ना थी।

पेड न्यूज़ ने उन की इस तमन्ना को और रवां किया। किसान आंदोलन की आग में वह अपनी बढ़त देख रहे थे। जयंत चौधरी फिर ओमप्रकाश राजभर, स्वामी प्रसाद मौर्य जैसे जातीय मोहरों ने उन का दिमाग और खराब किया। यादव वोटर उन के बंधुआ हैं ही। मुसलमान वोटों के निशाने पर सर्वदा से भाजपा चली आ रही है। तो अखिलेश यादव को लगा कि जातीय गणित, एम वाई फैक्टर के बूते वह अपना जंगल राज और यादव राज बड़ी शान से लौटा लेंगे। मनबढ़ई और अहंकार में चूर, सामंती अखिलेश अपनी यादवी लंठई में यह कभी नहीं समझ पाए कि अमित शाह बहुत पहले मंडल-कमंडल की दूरी खत्म कर सोशल इंजीनियरिंग के तहत इस की फसल 2014 से निरंतर काट रहे हैं। किसान आंदोलन की आग में भी पानी डाल चुके हैं। लेकिन सत्ता प्राप्ति के मद में अखिलेश को यह सब नहीं दिखा। आई ए एस अफसर और पूर्व मुख्य सचिव रहे आलोक रंजन अखिलेश के मुख्य चुनावी सलाहकार रहे। तमाम एन जी ओ, यू ट्यूबर और मीडिया को फंडिंग कर के नकली माहौल बना कर,

भाड़े की भीड़ बटोर कर अखिलेश का मन बढ़ाए रहे। कभी चुनाव नहीं लड़ने वाले दुर्योधन मनोवृत्ति वाले राम गोपाल यादव अखिलेश यादव के गाइड और फिलास्फर।

तिस पर वामपंथियों के लाल सलाम का साथ भी अखिलेश को मिला हुआ था। वामपंथी खुद अपनी चुनावी ज़मीन कब का गंवा चुके हैं पर दूसरों को जीत का सपना दिखाना और सपना बेचना बहुत अच्छी तरह जानते हैं। कांग्रेस को इसी सपने में बरबाद कर अब वामपंथियों ने अखिलेश यादव को बरबाद करने की ठान ली है। अखिलेश ने लेकिन मेहनत बहुत की। पानी की तरह पैसा बहाया। 47 सीट से आगे बढ़ कर इतनी बढ़त ली। यह भी आसान नहीं था। लेकिन योगी के बुलडोजर राज की हनक और धमक ने अखिलेश यादव के सत्ता के सपने को, अखिलेश राज के संभावित जंगल राज को बड़ी बेरहमी से कुचल दिया है। अगर बीते दिनों मोदी और योगी की रसाकसी न हुई होती तो अखिलेश यादव की समाजवादी पार्टी को विधान सभा में खड़े हो पाना कठिन होता। दहाई में ही होती। लोकसभा में जैसे कांग्रेस खड़ी नहीं हो पाती। बैसाखी ले कर खड़ा होना पड़ता है। यहां उत्तर प्रदेश विधान सभा में अखिलेश का भी यही हाल होता। पूर्व में मिली 47 सीट भी नहीं मिलती। जो भी हो उत्तर प्रदेश में जंगल राज के साइकिल के पहिए को पूरी तरह से रोक देने के लिए उत्तर प्रदेश की जनता को कोटिश : प्रणाम कीजिए। नहीं उत्तर प्रदेश की हालत बिहार से भी ज्यादा बुरी होती। सारी फिजिक्स-केमेस्ट्री धरी रह जाती और हमारे ग्लोबल लीडर नरेंद्र मोदी सिर्फ टुकुर-टुकुर ताकते रह जाते। 2024 में जीत का सपना भी सांसत में पड़ता सो अलग। अभी तो बुलडोजर राज के मार्फत योगी के कानून व्यवस्था को सैल्यूट करने का समय है। क्यों कि यह चुनाव मोदी-योगी नहीं जनता खुद लड़ रही थी। सपा के जंगल राज से बचने के लिए।

साभार [https://sarokarnama.blogspot.com/2022/03/blog-post\\_10.html](https://sarokarnama.blogspot.com/2022/03/blog-post_10.html) से